शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofek;k dk lokfekd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १० : नई दिल्ली : १०-१६ जून २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद ६ जून को पचपदरा पधार गए हैं। पूज्यप्रवर यहां बाईस दिन प्रवास करेंगे। २१ जून को यहां दीक्षा महोत्सव का समायोजन है। २८ जून को यहां से जसोल के लिए विहार हो जाएगा। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार २९ जून को चतुर्मास हेतु पूज्यप्रवर जसोल पधार जाएंगे।

nh{kk egksRlo d volj ij
ije J); vkpk;ioj }kjk inÙk mncksèku

आर्हत वाङ्मय में आता है--करेमि भंते सामाइयं--भगवन्! मैं सामायिक को स्वीकार करता हूं। गृहस्थ भी सामायिक को स्वीकार करते हैं और साधु बनने वाले भी सामायिक को स्वीकार करते हैं। अन्तर सिर्फ इतना है कि गृहस्थ अल्पकाल के लिए सामायिक स्वीकार करते हैं और साधु बनने वाले जीवन भर के लिए समस्त सावद्य योग का परित्याग कर सामायिक स्वीकार करते हैं। अभी आपने देखा एक मुमुक्षु को हमने साध्वी दीक्षा प्रदान की। इस प्रकार उसने जीवन भर के लिए मुनित्व को स्वीकार कर समस्त सावद्य योग का परित्याग कर दिया।

जैन शासन में त्याग-प्रत्याख्यान का बड़ा महत्त्व है। तेरापंथ धर्मसंघ, जिसके प्रणेता, संस्थापक या प्रवर्तक महामना परम श्रद्धेय आचार्य भिक्षु हैं, जिनके द्वारा प्रवर्तित शासन भैक्षव शासन या तेरापंथ शासन जो जिन शासन का ही एक अंग है, उसमें हम साधना कर रहे हैं। इसमें दीक्षित होने वाला व्यक्ति शिष्य धर्म से जुड़ जाता है। शिष्य धर्म से जुड़ना भी एक सुन्दर उपक्रम है। शिष्य धर्म से जुड़ना यानी किसी की छत्रछाया में आ जाना, शासन की छत्रछाया में और गुरु की छत्रछाया में आ जाना।

मैं तो ऐसा मानता हूं कि हमारा शासन एक कल्पवृक्ष है, कल्पतरु है। शासन को 'कल्पतरु' कहा गया है। शासन बड़ी चीज है। शासन के अधिपति या शासन के स्वामी वर्तमान आचार्य होते हैं। जो दीक्षित होता है, वह वर्तमान आचार्य का शिष्य बन जाता है। यही नहीं, पूर्वाचार्यों के द्वारा जो दीक्षित हैं, वे भी वर्तमान आचार्य के शिष्य या उनके आज्ञानुवर्ती हो जाते हैं। जो मेरे द्वारा दीक्षित हुए, वे तो मेरे शिष्य-शिष्याएं हैं ही, मेरे गुरु या पूर्वाचार्यों के द्वारा जो दीक्षित हुए, वे भी मेरे शिष्य-शिष्याएं हैं। परमपूज्य कालूगणी के द्वारा दीक्षित वयोवृद्ध साध्वियां आज भी धर्मसंघ में हैं। वे कभी पूज्य कालूगणी की शिष्याएं थीं, उनके बाद वे परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की शिष्याएं हुईं, उनके बाद वे परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की शिष्याएं हुईं और आज वे सब मेरी शिष्याएं हैं। यह शिष्य संपदा आगे से आगे जैसे-जैसे आचार्य आते हैं, वर्तमान आचार्य की शिष्य संपदा बन जाती है।

हमारे धर्मसंघ में पांच सौ से ज्यादा साध्वियां हैं और वे सब की सब वर्तमान आचार्य या यों कहें कि मेरी शिष्याएं हैं। यह हमारे धर्मसंघ की विधि है, परंपरा है, नियम है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के द्वारा दीक्षित शिष्य, भले ही वे मुनि दिनेशजी हों, मुनि मदनजी या कुमारश्रमणजी हों, परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के द्वारा दीक्षित मुनि गौरव, मुनि मृदु, मुनि गौतम हों या मेरे द्वारा दीक्षित मुनि शुभंकर आदि हों, वे सब के सब मेरे शिष्य हैं। ऐसा नहीं कि कोई कहे हम गुरुदेव तुलसी के शिष्य हैं, ये आचार्य महाप्रज्ञ के शिष्य हैं और वे आचार्य महाश्रमण के शिष्य हैं। ऐसा हमारे संघ में नहीं होता। जो गुरुदेव तुलसी के शिष्य थे,

वे ही आज आचार्य महाश्रमण के शिष्य हैं। यह हमारे धर्मसंघ की विधि है।

वर्तमान में जो दीक्षा पर्याय में बड़े हैं, उनके लिए 'आज्ञानुवर्ती' शब्द का प्रयोग होता है। वैसे तो वे भी वर्तमान आचार्य की अनुशासना में हैं, इसलिए स्थूल भाषा में उन्हें भी शिष्य कह दें, किन्तु पर्टिकुलर विवेचन करें तो गुरुभाई या जो रत्नाधिक मुनि हैं, वे आचार्य के आज्ञानुवर्ती के रूप में होते हैं। दीक्षा में बड़े होने के कारण उनके लिए 'शिष्य' शब्द का प्रयोग न कर 'आज्ञानुवर्ती' शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए। मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी हमसे दीक्षा में बड़े हैं, इसलिए हमारी आज्ञा में होते हुए भी इनके लिए कहा जाएगा आचार्य महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी। यह विधा हमारे धर्मसंघ में दीर्घकाल से चली आ रही है। साध्वी हेमप्रभा मेरे द्वारा दीक्षित है तो वह यह सोचे कि मैं आचार्य महाश्रमण की शिष्या हूं और वे मेरे दीक्षा प्रदाता गुरु हैं। गुरुदेव तुलसी के द्वारा दीक्षित मुनि या साध्वी यह सोचे कि दीक्षित मैं गुरुदेव तुलसी के द्वारा हूं, पर वर्तमान में शिष्य या शिष्या आचार्य महाश्रमण का हूं। हमारे यहां शिष्य सब एक गुरु के होते हैं, किसी साध्वी-साध्वी के व्यक्तिगत नहीं। यह हमारे धर्मसंघ की, तेरापंथ शासन की विधि है, परंपरा है, विधान है।

दीक्षा स्वीकार करना अपने आप में बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है। हमारा तो कामनारूप विचार है कि गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी के संदर्भ में हम सौ व्यक्तियों को दीक्षित करें। साध्वी हेमप्रभा आज दीक्षित हुई तो उसे सौ की गिनती में ले सकते हैं। हम गणना करें तो सौ में एक नाम इसका भी आ सकेगा। सौ दीक्षाओं की भावना है और कह सकते हैं कि हमारी सिवांची-मालानी की इस यात्रा में साध्वी हेमप्रभा की दीक्षा के साथ सिवांची-मालाणी की दीक्षाओं का श्री जिनेन्द्राय नमः (शुभारंभ) हुआ है। यथासंभव इस क्रम में आगे से आगे और दीक्षाएं होती रहेंगी।

दीक्षा को मैं बहुत बड़े सौभाग्य की बात मानता हूं। अनंतकाल से हमारा जीव कहां-कहां भ्रमण कर रहा है। अनंतकाल के भवभ्रमण के बाद जब साधु दीक्षा प्राप्त होती है तो निश्चित रूप से वह बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। हमारे यहां मुनि दीक्षा और समण दीक्षा दोनों होती हैं। जितनी भी समणियां हैं, वे कितनी भी वरिष्ठ हों, नियोजिका ही क्यों न हों और परमपूज्य गुरुदेव तुलसी, परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के द्वारा या मेरे द्वारा दीक्षित हों, आज वे सब मेरी शिष्याएं हैं। शिष्य बनना भी अपने आप में सौभाग्य की बात है। किसी गुरु का और वह भी किसी त्यागी और संयमी गुरु का शिष्य-शिष्या बन जाना, यह शिष्यों के लिए भी भाग्य की बात है और गुरु का भी यह भाग्य है कि उन्हें त्यागी-संयमी शिष्य-शिष्याएं प्राप्त हुईं। मेरा तो यह सोचना है कि भाग्य का योग न हो तो योग्य शिष्य-शिष्याओं का मिलना भी दुर्लभ है। आचार्य को अच्छे, योग्य और सुविनीत शिष्य-शिष्याएं मिलते हैं तो इसमें भाग्य का भी योग होता है। इस प्रकार समृद्ध शिष्य संपदा की प्राप्ति भी आचार्यों के सौभाग्य की सूचक है।

मुनित्व को स्वीकार कर लेना अपने आप में बड़े सौभाग्य की बात होती है और उसमें भी तेरापंथ शासन में दीक्षित होना तो विशेष महत्त्वपूर्ण और सौभाग्य की बात है। हमारे धर्मसंघ में आज्ञा का बड़ा महत्त्व है। किसी साधु को गोचरी के लिए या किसी अपेक्षावश बाहर जाना है तो पहले आज्ञा ले, उसके बाद बाहर जाए। कपड़ा लाना है तो उसके लिए भी पहले हमसे पूछे, आज्ञा ले, उसके बाद जाकर वस्त्र लाए और लाने के बाद पुनः निवेदन करे। इस तरह हमारे धर्मसंघ में आज्ञा की एक सुदृढ़ व्यवस्था है। यह व्यवस्था और जगह भी हो सकती है। हम किसी को नीचा दिखाने के लिए ऐसा नहीं कह रहे हैं। हमारे यहां ऐसी व्यवस्था है, इसलिए हम ऐसा कह रहे हैं। इसे हम अपना सौभाग्य मानते हैं कि हमारे यहां इतने सुदृढ़ अनुशासन की व्यवस्था है। हम बालोतरा से इधर आए तो पीछे रहने वाले बड़ी संख्या में साधु-साध्वियों की व्यवस्था की। कौन कहां रहेगा, इसकी पूरी व्यवस्था करनी पड़ती है। चौमासे की बात छोड़ें, शेषकाल में भी कौन कहां रहेगा, इसकी विधिवत व्यवस्था होती है। ऐसा नहीं कि हम तो यहां आ गए, अब जिसकी

जहां मर्जी हो, वहां चला जाए। किसको कहां जाना और रहना है, इस संदर्भ में हमारा निर्देश प्राप्त करना होता है। इतना ही नहीं, बालोतरा में रहें तो कौन-सा सिंघाड़ा या कौन साधु-साध्वियां कहां किसके मकान में रहेंगे, यह निर्देश भी आचार्य का होता है। आज्ञा और अनुशासन के प्रति गहरी निष्ठा के कारण ही ऐसा संभव हो पाता है। अगर आज्ञा, मर्यादा और अनुशासन को वे इतना महत्त्व न दें तो केवल विधान की सार्थकता क्या है? लंबी-चौड़ी आचारसंहिता बना दें और उसका पालन करने वाला कोई है नहीं तो उस आचारसंहिता से क्या लाभ? जो लिखा है, वह पन्ने में ही सीमित रहेगा। पन्ना तो किसी का हाथ या कान पकड़ कर कहेगा नहीं कि तुम मेरा पालन करो। मूल बात है क्रियान्विति की। पन्ने में लिखी मर्यादाओं के प्रति आस्था हो, तभी उन मर्यादाओं, आज्ञाओं का पालन होता है।

हमारे धर्मसंघ की मर्यादाएं हैं--**lc lkèk&lkfèo;k ,d vkpk; dh vkKk e jgA fogkj prekl vkpk; dh vkKk l djA** इन मर्यादाओं के प्रति संघ के साधु-साध्वियों में निष्ठा है, तभी वे सजगता से इनका पालन करते हैं। हमें एक सात्विक गौरव की अनुभूति होती है कि किस प्रकार हमारे साधु-साध्वियां, समण-समणियां गुरु-आज्ञा को महत्त्व देते हैं और उसके अनुसार चलते हैं। यह जरूरी नहीं कि गुरु का हर निर्णय साधु-साध्वियों के मन के अनुकूल ही हो। निर्णय या निर्देश मन के प्रतिकूल भी हो सकता है। निर्णय मन के प्रतिकूल हो तो भी उसे शिरोधार्य करना महत्त्वपूर्ण बात है। मन के अनूकूल निर्णय को पालने में कौन-सी बड़ी बात है। बड़ी बात है मन के प्रतिकूल निर्णय को भी सम्मान के साथ पालना। किसी की इच्छा है इस बार का चौमासा अमुक जगह करूं और हमारा निर्देश हुआ किसी और जगह के लिए तो हमारे निर्णय को सहर्ष स्वीकार कर निर्दिष्ट स्थान के लिए चतुर्मास हेतु जाना महत्त्वपूर्ण बात है। युवाचार्य जीतमलजी (चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य) ने इसका उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया था। वे युवाचार्य के रूप में चतुर्मास के लिए बीदासर पधार गए थे। उनके गुरु तृतीय आचार्य रायचन्दजी का आदेश आया--'जीतमल! तुम बीकानेर चतुर्मास करो।' आषाढ़ का महीना आ पहुंचा था, मौसम भी भयंकर गर्मी का। बीदासर के श्रावकों ने निवेदन किया 'युवाचार्यश्री! मौसम पूरी तरह से प्रतिकूल है और बीकानेर यहां से दूर। आप बुद्धिमान हैं और प्रभावशाली भी, कोई ऐसी गली क्यों नहीं निकाल लेते कि गुरु आज्ञा का पालन भी हो जाए और बीकानेर भी न जाना पड़े।' जयाचार्य ने कहा--'गली काढ़े गिंवार। मैं गिंवार नहीं जो गली निकालूं। मैं तो आचार्यश्री के निर्देश का अक्षरशः पालन करूंगा।'

युवाचार्य जीतमलजी उस भीषण गर्मी में बीदासर से बीकानेर पधारे। इतिहास बताता है--उस विहार में उन्हें मारणान्तिक कष्ट सहने पड़े। गुरु की आज्ञा पालने में प्राण भले ही चले जाएं, लक्ष्य रहे उनके इंगित की अनुपालना का। हमारे में ऐसी निष्ठा पुष्ट से पुष्टतर होती रहे कि गुरु का निर्देश है तो कुछ कठिनाई और तकलीफ भोग कर भी गुरु की आज्ञा को निष्ठापूर्वक पूर्णता तक पहुंचाना है।

साध्वी हेमलता, जो अभी दीक्षित हुई, वह भी इस बात का ध्यान रखे कि कठिनाई भले ही आए, किन्तु गुरु के निर्देश की पालना करनी है। यह निष्ठा, यह संस्कार हमारे नवदीक्षित साधु-साध्वियों में रहें, यह आवश्यक है। हमारा सौभाग्य है कि ऐसे संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे साधु-साध्वियों में संक्रान्त होते रहे हैं। हालांकि इसमें और वृद्धि होनी चाहिए। कारण और कठिनाई हो तो निवेदन करा दें, एक बार नहीं, दो बार करा दें, किन्तु अन्तिम आदेश हो गया तो अपनी भावना गौण, अपना चिंतन गौण, जो गुरु का आदेश हो गया, उसके प्रति साधु-साध्वियां, समण-समणियां समर्पित हो जाएं और थोड़ा कष्ट सहकर भी गुरु आज्ञा का पालन करने का प्रयास करें। यह हमारे धर्मसंघ की महत्त्वपूर्ण बात है और इस बात में कट्टरता रखनी चाहिए। यह कट्टरता आत्मकल्याण की दृष्टि से भी सहायक और महत्त्वपूर्ण है कि कोई व्यक्ति अपने शिष्य धर्म को निभाते हुए अपने गुरु के आदेश के प्रति समर्पित हो जाता है। 'आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया।' संस्कृत में कहा गया कि गुरुओं की आज्ञा हो जाए तो विचार नहीं करना चाहिए कि उसका पालन करूं

या न करूं? डावांडोल की स्थिति नहीं होनी चाहिए। बात स्पष्ट हो गई, स्पष्ट निर्देश हो गया, फिर कोई विचार नहीं, विकल्प नहीं। उस आज्ञा का पालन करना ही है। सेनापति का आदेश हो जाए तो सैनिकों को निर्दिष्ट दिशा में आगे बढ़ना ही अभीष्ट है। सैनिकों को वह आदेश जचे, न जचे, आदेश हो गया तो सैनिक का धर्म है प्राण जाए तो जाए, आदेश का परिपालन हर हालत में करना। जैसे अपने सेनापति के आदेश का पालन करना सैनिक का धर्म है, वैसे ही अपने गुरु के आदेश का पालन करना शिष्य का धर्म है।

धर्मसंघ में जो दीक्षित होते हैं, वे एक तरह से जीवन भर के लिए समर्पित हो जाते हैं। उनकी व्यवस्था करना शासन का कर्तव्य होता है। कोई साधु-साध्वी ग्लान है, बीमार और वृद्ध है तो उसकी सेवा की व्यवस्था करना आचार्यों का धर्म है। भले ही उन्हें मानसिक श्रम करना पड़े, आधी रात को उठकर बैठना पड़े, किन्तु शासन के किसी सदस्य को सेवा की अपेक्षा है, अत्यावश्यक बात है तो नींद का परित्याग करके इस पर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए। हम सभी भैक्षव शासन के अनुयायी हैं। साधु-साध्वी और समणश्रेणी के रूप में हम सब संघ के सदस्य हैं, अनुयायी हैं। सबका परम धर्म है कि शासन की सेवा का लक्ष्य रखें। थोड़ा कष्ट सहकर भी शासनपति के निर्देश के अनुसार शासन की सेवा करें और निर्देश नहीं है तो भी अपने विवेक से करें। कोई साधु-साध्वी बीमार है, उसकी सेवा का निर्देश तो नहीं दिया गया, लेकिन बिना निर्देश भी उसकी सेवा पर ध्यान देना चाहिए। निर्देश के बिना भी उसकी सेवा के प्रति जागरूक बन जाना चाहिए, क्योंकि हम सब एक ही शासन के अंग हैं, साधर्मिक हैं। साधर्मिक की सेवा करना हमारा कर्तव्य है।

दीक्षा समारोह बहुत महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम होता है। कोई व्यक्ति जीवन भर के लिए सांसारिक संबंधों को त्याग कर एक नए जीवन को स्वीकार करता है तो इससे सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। मनुष्य जीवन दुर्लभ है। इसे सफल बनाने के लिए धर्म और अध्यात्म की साधना को बढ़ाने का प्रयास करें।'

ije J); vkpk;Jh egkJe.k lenMh e

eu efUnj e fojkteku gk rhFkdj

„, ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन परम्परा में 'तीर्थंकर' शब्द का बड़ा महत्त्व है। जैन मान्यतानुसार दृश्य दुनिया में प्राणी जाति और मानव जाति में तीर्थंकर से बड़ा व्यक्ति दूसरा कोई नहीं हो सकता। वे सर्वाधिक अर्हता संपन्न होते हैं। उनका महत्त्व इसलिए है कि वे राग-द्वेष को जीतने वाले, वीतराग होते हैं, केवलज्ञानी अर्थात सर्वज्ञ होते हैं। वे साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकारूपी धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले होते हैं और अधिकृत प्रवचनकार होते हैं। तीर्थंकर वीतराग ही नहीं, वीतरागों में प्रमुख होते हैं। उनकी स्तवना करना, भक्ति करना कर्म निर्जरा का एक साधन है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'जैन परंपरा में और अन्यत्र भी मूर्तिपूजक और अमूर्तिपूजक दोनों परंपराएं चलती हैं। हम लोग आचार्य भिक्षु के अनुयायी हैं। हमारा मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं है। हम लोग चैतन्य की पूजा करने वाले हैं, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की पूजा करने वाले हैं। द्रव्य पूजा में हमारा विश्वास नहीं है। इसलिए हम तीर्थंकर की भावपूजा, भाव स्तवना, भाव भक्ति आदि करें। तीर्थंकर हमारे मन मंदिर में विराजमान हों। हम वीतराग की केवल भक्ति ही न करें, अपितु स्वयं भी वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें। वह चेतना, जिसमें वीतरागता होती है, उसका भौतिक कामना से मुक्त रहकर स्मरण करना, उसकी भक्ति करना अध्यात्म साधना में सहायक होता है। भक्ति से कई बार प्रासंगिक रूप में स्वतः ऐसी आभा बन सकती है जिससे विघ्न-बाधा पास ही न आए। हम भौतिक आकर्षण से बचें और तीर्थंकर की भक्ति के द्वारा अध्यात्म के शिखर की ओर बढ़ें।' आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के मध्य प्रसंगवश 'प्रभु म्हारे मन मंदिर में पधारो' गीत का संगान भी किया।

कार्यक्रम में पूज्यवर के प्रवचन से पूर्व मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। समदड़ी के सरपंच श्री बाबूलाल परिहार, बालोतरा नगरपालिकाध्यक्ष श्री महेश बी.चौहान एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषादेवी चौहान ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। अध्यात्म साधना केन्द्र महरोली-दिल्ली से समागत श्री धर्मानन्दजी ने प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। समणी कंचनप्रज्ञाजी आदि समणियों ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

आज प्रातः दीक्षार्थिनी हेमलता जीरावला की शोभायात्रा समदड़ी के विभिन्न मार्गों से होती हुई प्रवचन पंडाल में पहुंचकर संपन्न हुई। रात्रि में पारमार्थिक शिक्षण संस्था द्वारा दीक्षार्थिनी बहन का मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ, जिसमें पारिवारिकजनों, स्थानीय श्रावक समाज और पारमार्थिक शिक्षण संस्था की ओर से दीक्षार्थिनी के प्रति मंगलभाव व्यक्त किए गए। कार्यक्रम में पूज्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ।

Hk0; nh{kk lekjkg

…f ebA छहदिवसीय समदड़ी प्रवास का अन्तिम दिन। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने समदड़ी की मुमुक्षु हेमलता जीरावला को साध्वी दीक्षा प्रदान की। इस भव्य समारोह का शुभारंभ पूज्यवर द्वारा महामंत्रोच्चार से हुआ, तत्पश्चात्‌ मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। मुमुक्षु ज्योति ने दीक्षार्थिनी का परिचय प्रस्तुत किया। दीक्षार्थिनी हेमलता ने अपने उल्लसित भावों को अभिव्यक्त किया। मुनि मदनकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'दीक्षा का अर्थ है नए जीवन की प्राप्ति हेतु आरोहण करना। यथार्थतः देखा जाए तो यह जीवन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्षण होता है। वह व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होता है, जिसे यह दुर्लभ अवसर प्राप्त होता है। दीक्षित होने के साथ गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित हो जाना शिष्य का परम कर्तव्य होता है। गुरु दृष्टि को हमेशा आगे रखने वाला साधक निर्विघ्नता के साथ आगे बढ़ता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है।'

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक श्री डूंगरमल बागरेचा द्वारा आज्ञापत्र वाचन के उपरान्त दीक्षार्थिनी के पिता श्री मांगीलाल जीरावला ने आज्ञापत्र पूज्यवर के करकमलों में समर्पित किया। पूज्यवर ने दीक्षार्थिनी के माता-पिता सहित निकट ज्ञातिजनों से मौखिक आज्ञा भी प्राप्त की और दीक्षार्थिनी के वैराग्य एवं समर्पण भाव को परखा। तत्पश्चात पूज्यवर ने भगवान महावीर एवं पूर्ववर्ती दसों आचार्यों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए आर्षवाणी के उच्चारण के साथ दीक्षार्थिनी को साध्वी दीक्षा प्रदान की। नवदीक्षित साध्वीश्री ने पूज्यवर को सादर वंदना की। आचार्यवर ने उन्हें अतीत की आलोचना करवाई। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने उनका केशलुंचन करते हुए आर्षवाणी के उच्चारण के साथ रजोहरण प्रदान किया। नामकरण संस्कार के अन्तर्गत पूज्यवर ने मुमुक्षु हेमलता को **साध्वी हेमप्रभा** नाम से अभिहित किया। उपस्थित विशाल जनसमूह ने 'मत्थएण वंदामि' का उच्चारण कर नवदीक्षित साध्वीजी का अभिवादन किया। परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने अपने दीक्षान्त अभिभाषण में साध्वी हेमप्रभाजी को हर कार्य में संयम रखने का संबोध प्रदान किया।

इस अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यवर द्वारा प्रदत्त प्रवचन इसी विज्ञप्ति के प्रारंभ में प्रकाशित है।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'परमपूज्य आचार्यवर ने समदड़ीवासियों पर अनुग्रह कर दीक्षा का सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रदान किया। दीक्षा के प्रति लोगों में आकर्षण भी है। महाव्रतों का स्वीकरण दीक्षा है। कुछ लोग दीक्षा को संसार से पलायन मानते हैं, किन्तु यह भागने का नहीं, जागने का कार्य है। जो गृहस्थ स्वयं को सक्षम महसूस करे, उसे महाव्रतों को स्वीकार करने की दिशा में अग्रसर होना चाहिए, अन्यथा वे अणुव्रतों को अवश्य स्वीकार करें। इस अवसर पर नवदीक्षित साध्वी के प्रति मैं यह मंगलकामना करती हूं कि गुरु की पवित्र छत्रछाया में उनके पावन आशीर्वाद से अपने लक्ष्य की ओर

बढ़ती रहो और अपनी साधना को विकसित करती हुई पूर्ण समाधि का जीवन जीओ।'

कार्यक्रम के अंत में समदड़ी तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जीरावला ने आभार ज्ञापित किया। श्री बाबूलाल लूंकड़ ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। आज मध्याह्न में पूज्यवर की पावन सन्निधि में समदड़ी के नवनिर्मित तेरापंथ भवन के निर्माण में सहयोगी अनुदानदाताओं एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान समारोह समायोजित हुआ।

N=kNk;k g x#&dik

f tuA समदड़ी का छहदिवसीय प्रवास संपन्न कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः पुनः जेठन्तरी की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती सिलोर गांव के सैकड़ों ग्रामीणों ने पूज्यवर का स्वागत-अभिनंदन किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यवर लगभग नौ किमी. का विहार कर जेठन्तरी पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भारतीय वाङ्मय में गुरु को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गुरु अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने वाले होते हैं। वैसे तो भौतिक शिक्षा देने वाले भी गुरु कहलाते हैं, लेकिन वे केवल इस जन्म का पथ प्रशस्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक गुरु तो अग्रिम जन्मों का भी पथ प्रशस्त कर देते हैं। अध्यात्म के क्षेत्र में वह व्यक्ति गुरु कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता, जिसमें संयम, त्याग और ज्ञान नहीं होता। शिष्य के लिए तो गुरु के अनुशासन में चलना ही विशेष बात होती है। गुरु की आज्ञा के बिना स्वाध्याय, ध्यान, तप आदि को महत्त्वपूर्ण नहीं माना गया। वे शिष्य धन्य होते हैं जो गुरुचरणों के प्रति, उनके इंगित के प्रति सर्वात्मना समर्पित होते हैं।'

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'शिष्य का यह चिन्तन होना चाहिए कि मैं गुरु की कृपा से वंचित न रहूं। कभी यह लगे कि गुरु किसी कारण से अप्रसन्न हो गए हैं तो शिष्य उस पर ध्यान दे कि गुरु की कृपा के बिना मेरा क्या मूल्य है? वह प्रयासपूर्वक गुरु की कृपा को पुनः प्राप्त करे। गुरु की कृपा एक बड़ी छत्रछाया होती है। उस छाया में रहने वाला शिष्य कृतकृत्य हो जाता है। इसलिए शिष्य गुरु की अकृपा की उपेक्षा न करे, अपितु विनय, भक्ति और समर्पण के द्वारा उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करे। कुछ शिष्य गुरु के आधारभूत होते हैं। वे गुरु को गण-चिन्ता से मुक्त कर देते हैं। किन्तु ऐसे सौभाग्यशाली शिष्य विरल होते हैं। शिष्य का धर्म है गुरु की सेवा करना, उनकी भक्ति करना। गुरु जहां नियोजित करना चाहें, जो इंगित प्रदान करें, उसकी आराधना करना बड़ी सेवा है। गुरु परम उपकारी होते हैं। वे सम्यक्त्व प्रदान करते हैं, संयम और ज्ञान प्रदान करते हैं। ऐसे परम उपकारी गुरु की सेवा करना, उनके इंगित की आराधना करना शिष्य का परम धर्म होता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का उद्बोधन भी हुआ। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। श्री उम्मेदसिंह चंपावत ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए।

iFke nh{kk lekjkg e iFke HkV

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः जेठन्तरी से लगभग छह किमी. का विहार कर द्विदिवसीय प्रवास हेतु पारलू पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से यहां का न केवल तेरापंथ समाज आह्लादित था, अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी उल्लास का वातावरण था। सैकड़ों ग्रामीणों ने पूज्यवर की भावभीनी अगवानी की। चारों ओर अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। पूज्यवर का द्विदिवसीय प्रवास श्री जैन समाज भवन में हुआ।

आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु परिमल बागरेचा (पारलू) को साध्वी दीक्षा प्रदान की। तेरापंथ के इतिहास में पारलू में दीक्षा का यह प्रथम अवसर था तो पारलू की भी यह प्रथम दीक्षा थी। पूज्यवर के महामंत्रोच्चार से प्रारंभ इस समारोह में मुमुक्षु रीना ने दीक्षार्थिनी का परिचय प्रस्तुत किया। दीक्षार्थिनी परिमल ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। बालक हर्ष बागरेचा ने अपनी बहन के प्रति मंगलभाव प्रस्तुत किए। सुश्री करिश्मा बागरेचा ने अपनी भगिनी के प्रति शुभाशंसा व्यक्त करते हुए साध्वी सम्यक्त्वयशाजी द्वारा अपनी संसारपक्षीया ननिहाल भूमि में पूज्यवर के पदार्पण पर प्रेषित भावों को प्रस्तुति दी। दीक्षिार्थिनी के पिता श्री रमेश बागरेचा ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ कन्यामंडल ने पूज्यवर का स्वागत तथा दीक्षार्थिनी के प्रति अपने मंगलभावों को अभिव्यक्ति देते हुए सुमधुर गीत का संगान किया। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री रामलाल बागरेचा, डा.महावीर गोलछा तथा श्री नरेन्द्र सुराणा ने पूज्यवर के पादाम्बुज में अपने भावसुमन अर्पित किए। राजस्थान के पूर्व गृहराज्य मंत्री और अखिल भारतीय आंजना समाज के अध्यक्ष श्री अमराराम चौधरी ने पूज्यवर के स्वागत में भावभीनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी कमलप्रभाजी ने अपनी चतुर्मास भूमि और साध्वी तरुणयशाजी ने अपनी संसारपक्षीय ननिहाल भूमि में अपने आराध्य को वर्धापित किया।

श्री डूंगरमल बागरेचा ने आज्ञापत्र का वाचन किया और दीक्षार्थिनी के पिता श्री रमेश बागरेचा ने आज्ञापत्र पूज्यवर को समर्पित किया। आचार्यवर ने दीक्षार्थिनी के माता-पिता और निकट परिजनों से मौखिक स्वीकृति भी प्राप्त की। उपस्थित हजारों लोगों के सामने आचार्यवर ने दीक्षार्थिनी परिमल के वैराग्य और समर्पण भाव का परीक्षण करने के उपरान्त भगवान महावीर और तेरापंथ की पूर्ववर्ती आचार्य परंपरा का श्रद्धा के साथ स्मरण करते हुए आर्षवाणी के उच्चारण के साथ दीक्षार्थिनी को आजीवन सावद्य योग का प्रत्याख्यान करवाया। इसी के साथ मुमुक्षु परिमल साध्वी बन गई। नवदीक्षित साध्वी ने तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक पूज्यवर को विधिवत वंदन किया। आचार्यवर ने उन्हें अतीत की आलोचना करवाई और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने उनका केशलुंचन संस्कार करते हुए आर्षवाणी के उच्चारण के साथ रजोहरण प्रदान किया। पूज्यवर ने नवदीक्षित साध्वी को **lkèoh ic);'kk** के रूप में संबोधित कर नामकरण संस्कार किया। हजारों की संख्या में उपस्थित जनमेदिनी ने 'मत्थएण वंदामि' का उच्चारण कर नवदीक्षित साध्वीजी को वंदन किया। आचार्यवर ने अपने दीक्षान्त संबोधन में नवदीक्षित साध्वी प्रबुद्धयशाजी को प्रत्येक कार्य में संयम रखने का पाथेय प्रदान किया।

आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को महाव्रतों, समितियों और गुप्तियों के प्रति जागरूक रहने तथा संघीय मर्यादाओं के प्रति निष्ठावान बने रहने की प्रेरणा प्रदान की। मुनि गौरवकुमारजी द्वारा लेखपत्र के उच्चारण के पश्चात साधु-साध्वियों ने खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

इस अवसर पर मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'दीक्षा का पावन अवसर हर किसी के हृदय में नए भाव पैदा कर देता है। इस भौतिक युग में जहां हर व्यक्ति सुख-सुविधा के पीछे दौड़ रहा है, वहां त्याग का जीवन जीने के लिए अध्यात्म की दिशा में प्रस्थान करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। आप लोग यदि दीक्षा न ले सकें तो अपनी एक-एक बुराई को जरूर त्यागें। आपके लिए वह भी कल्याण का पथ प्रशस्त करने वाला बन सकेगा।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरणादायी वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ के इतिहास में पारलू की दीक्षा का और पारलू में दीक्षा का यह प्रथम प्रसंग है। हजारों लोगों ने इस दृश्य को अपनी आंखों से देखा। आज पारलू में कई उत्सव एक साथ हो गए। पूज्य आचार्यवर का पावन पदार्पण, दीक्षा

का सांस्कृतिक कार्यक्रम और हाजरी का दृश्य--एक साथ ये तीन कार्यक्रम अभूतपूर्व हैं। यदि यहां के लोग 'अणुव्रत गांव' के रूप में अपने गांव की पहचान बनाएं तो यह एक नया इतिहास बन सकता है।'

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। इस समारोह में हजारों की संख्या में जैनेतर व्यक्ति भी संभागी बने।

पारलू में पैंतालीस तेरापंथी परिवारों सहित पचपन जैन घर हैं। पूज्यवर के द्विदिवसीय प्रवास के प्रसंग पर सभी प्रवासी परिवारों ने भी अपने घर खोलकर दर्शन-उपासना का लाभ लिया। आज रात्रि में पूज्यवर ने उन्हें निकट सेवा का अवसर प्रदान किया। इस दौरान लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

v.kor g ufrdrk dh xxk

„ tuA आज प्रातः आचार्यप्रवर आंजना चौधरी समाज के राजाराम आश्रम में कुछ क्षण के लिए पधारे। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सुख पाना चाहता है। कोई भी दुःख पाना नहीं चाहता। व्यक्ति सुख के साथ समृद्धि भी पाना चाहता है। सुख-समृद्धि तब मिलती है, जब उसके अनुरूप सत्कर्म किया होता है, पुण्य का खजाना उसके पास होता है। व्यक्ति सत्संग व सम्यक् कार्यों में अपने समय का नियोजन करता है तो वह पाप बंधन से विलग हो जाता है। ऐसी स्थिति में पुण्य-खजाना समृद्ध बन जाता है, भाग्य जाग जाता है। धर्म की उपासना पुण्य के लिए नहीं करनी चाहिए। निष्काम भावना से व्यक्ति धर्म की साधना में संलग्न बने तो अध्यात्म एवं व्यवहार, दोनों में सफलता प्राप्त कर सकता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में शरीर धारण करने एवं उसे टिकाए रखने का प्रयास करने एवं जीवन जीने के उद्देश्यों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हुए कहा--'शरीर धारण इसलिए किया जाता है कि इससे पूर्वार्जित कर्मों का नाश करने हेतु साधना हो सकती है। शरीर से अध्यात्म साधना होती है, इसलिए उसे टिकाए रखना जरूरी है। शरीर की अपेक्षापूर्ति करनी आवश्यक है। उसे भोजन, पानी, हवा और दवा चाहिए, मकान और कपड़ा चाहिए। इन अपेक्षाओं की सम्यक् आपूर्ति होती रहे, साथ ही आयुबल हो तो प्रलंब काल तक यह शरीर टिक सकता है। ऐसी स्थिति में इस शरीर से लंबे समय तक साधना की जा सकती है।'

किसान सम्मेलन के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम में किसानों की विराट उपस्थिति में आचार्यवर ने कहा--'हमारे यहां 'अन्नदाता' शब्द प्रचलित है। राजा-महाराजा और धर्मगुरु के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त होता रहा है। एक अपेक्षा से यह समीचीन भी है। किसान भी अन्नदाता है। वह अन्न उपजाता है। अनाज का उत्पादन कर वह जनता की बड़ी सेवा करता हैं। पशु-पक्षियों की सेवा करता है। खेती श्रमसाध्य कार्य है। इसमें जीव-हिंसा भी जुड़ी हुई है। हिंसा का जितना अल्पीकरण हो सके, उसका प्रयास करें। किसान लोग इस बात का ध्यान रखें कि उनके जीवन में चरित्र का विकास हो। वे ईमानदारी, अहिंसा एवं मैत्री का प्रयोग करें। शराब, अफीम, धूम्रपान जैसे नशों से बचें। यह जिन्दगी गंदगी का घर न बने। व्यक्ति के जीवन में बन्दगी हो, साधना हो, परिवारों में शान्ति रहे। अणुव्रत नैतिकता की गंगा है। इसमें स्नान कर अपने जीवन को अच्छा बनाते रहें।'

जोधपुर के डी.वाई.एस.पी.श्री पहाड़सिंह राठौड़ ने अपने भावपूर्ण वक्तव्य में बताया--'जयपुर में आचार्य तुलसी एवं महाप्रज्ञजी के निर्देशन में प्रेक्षाध्यान शिविर लगा था। मैंने अपने साथियों के साथ उस शिविर में भाग लिया था। इससे हमारे जीवन में आशातीत परिवर्तन आया।'

नवदीक्षित साध्वी प्रबुद्धयशाजी के संसारपक्षीय पिता श्री रमेश बागरेचा ने अपनी विचाराभिव्यक्ति के साथ मुमुक्षु परिमल की प्रेरणा से भरे गए कन्या भ्रूणहत्या के डेढ़ हजार तथा नशामुक्ति के पांच सौ

फार्म गुरुचरणों में भेंट किए। सुश्री दीपिका चोपड़ा ने कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पारलू के इतिहास में यह प्रथम अवसर रहा कि तेरापंथ की कोई दीक्षा इस गाव में परिसंपन्न हुई। बहुत कम दीक्षा समारोह ऐसे होते हैं, जिसमें उपस्थित लोगों में लगभग आधे लोग जैनेतर हों। यहां के दीक्षा कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीण विभिन्न वर्गों और जातियों से संबद्ध थे।

मुमुक्षु परिमल (साध्वी प्रबुद्धयशा) की प्रेरणा से गांववासियों में त्याग-प्रत्याख्यान की अच्छी प्रेरणा जागी। चौधरी समाज में विशेष कार्यक्रमों के दौरान सामूहिक रूप में अफीम जैसे नशीले पदार्थों का खुले तौर पर सेवन होता है। उस पर सामाजिक स्तर पर रोक लगाना उल्लेखनीय प्रसंग है। इसके साथ अफीम का सेवन करने पर इक्यावन सौ रुपये अर्थदंड लगाने का भी निर्णय हुआ। इसी समाज में वैवाहिक अवसरों पर दो से अधिक मिठाई बनाने पर प्रतिबंध लगाया गया। मुमुक्षु परिमल के चाचा गौतम बागरेचा ने सालाना बीस लाख की बिक्री के बावजूद नशीले पदार्थों के व्यापार का परित्याग किया। नशामुक्ति संकल्प के फार्म के अलावा डेढ़ हजार लोगों ने नशामुक्त रहने की प्रतिज्ञा की। चारण समाज के कई व्यक्तियों ने निरामिषभोजी बनने का संकल्प स्वीकार किया। इस समाज की कई बहनों ने रात्रि भोजन का त्याग किया। एक तरह से दीक्षा का प्रसंग पूरे गांव में त्याग की चेतना के जागरण का उपक्रम बन गया।

thou e dj x.k dk dyD'ku

† tuA आज प्रातः पारलू से लगभग आठ किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर पालीवालों की ढाणी उमरलाई पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'मनुष्य जीवन एक अवसर है। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह इस प्राप्त अवसर का लाभ कैसे उठाता है ? यदि व्यक्ति इन्द्रियजन्य विषय-भोगों में अपने समय को बर्बाद कर देता है तो वह परम को कैसे प्राप्त करेगा, मंजिल को कैसे पाएगा? क्षणिक शरीर सुख के लिए व्यक्ति अनंतानंत आत्मसुख को न खोए।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आर्हत वाङ्मय पर अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति अपने गुणों के आधार पर साधु बनता है तो अवगुणों से असाधु कहलाता है। साधु का एक अर्थ है महात्मा, उसका दूसरा अर्थ है सभ्य आदमी, सज्जन, आर्य। साधु का यह सहज कर्तव्य होता है कि वह सद्गुण और सुजनता का विकास करे, दुर्जनता को छोड़े।'

सज्जन का चरित्र कैसा होता है? उसकी कसौटी क्या है? इस संदर्भ में आचार्य सोमप्रभसूरि के एक श्लोक के आधार पर मार्गदर्शन करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'सज्जनता की पहली कसौटी है पर निन्दा से बचना। यदि किसी में दोष है तो क्यों उसका प्रचार-प्रसार हो? किसी में दोष न होते हुए भी दोषोद्घाटन करना गलत है। दूसरों के गुणों का बखान करना एवं सबके प्रति प्रमोदभाव रखना दूसरी कसौटी है। तीसरी बात--दूसरों के सुख एवं ऋद्धि को देखकर संतोष करें, ईर्ष्या न करें। चौथी कसौटी है--दूसरों की पीड़ा व तकलीफ देखकर संवेदनशील होना और चिंतन करना कि यह किन कर्मों से दुःख पा रहा है और मैं इसे कैसे चित्त समाधि पहुंचाऊं? आत्मप्रशंसा व आत्मख्यापन न करना पांचवीं कसौटी है। नीति-मार्ग पर चलना और हर कार्य नीति से करना छठी कसौटी है। सातवीं कसौटी है--औचित्य का उल्लंघन नहीं करना, अनुचित नहीं करना। किसी के द्वारा कठोर और कटुवचन कहे जाने पर भी गुस्सा नहीं करना आठवीं कसौटी है। क्रोधाविष्ट होकर किसी को थप्पड़ मारना, गाली निकालना बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है, उसे सहना, सहलाना और संभालना। व्यक्ति अलग-अलग व्यक्तियों व पार्टियों से पैसे का कलेक्शन करता है। गुणी व्यक्तियों के जीवन से गुणों का कलेक्शन करें और अपने सद्गुण के खजाने को समृद्ध बनाते रहें।'

मुनि राजकुमारजी के गीत संगान से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। सेवानिवृत्त शिक्षक ठाकुर पदमसिंहजी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा--'मैंने अपने जीवन में कोई नशा नहीं किया।' ठाकुर साहब ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। बालोतरा के श्री पारसमल भंडारी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में गांव वालों की उल्लेखनीय उपस्थिति थी। गांव में पदार्पण के अवसर पर गांव की महिलाओं ने लोकगीतों की प्रस्तुति के साथ पूज्य आचार्यवर का स्वागत किया। रात्रि में भी कार्यक्रम चला। आज आचार्यवर के मुख कमल का केशलुंचन हुआ।

l;e e lekfgr g vè;kRe dk lkj

‡ tuA प्रातः चौदह किमी. का विहार कर आचार्यवर रामसीन मूंगड़ा पधारे। वहां आपका प्रवास राजकीय प्राथमिक विद्यालय में हुआ। मार्ग में मूलजी की ढाणी होते हुए पूज्यवर कुछ देर के लिए जोगाजी की ढाणी में रुके। वहां बुढत चौधरी परिवार ने पूज्यवर का स्वागत किया। बालोतरा में रहने वाले बैदमूथा परिवारों के अधिकांश लोग मूलतः इसी गांव के हैं। बालोतरा से यह गांव सिर्फ पांच किमी. दूर है, इस कारण वहां के लोग आज बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। कहा जाता है कि पूज्य कालूगणी के बाद आचार्य महाश्रमण का इस गांव में पदार्पण हुआ है।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में कन्याओं एवं महिलाओं ने गीत प्रस्तुत किया। पूर्व गृह राज्यमंत्री श्री अमराराम चौधरी, ठाकुर नाहरसिंहजी, ठाकुर भवानीसिंहजी, प्रधानाध्यापक श्री किशोरपुरीजी एवं निखिल बैदमूथा ने अपने विचार व्यक्त किए। सुश्री प्रीति गोगड़ (बालोतरा) ने पूज्यप्रवर से दीक्षा की प्रार्थना की। दस वर्षीय बालिका प्रसिद्धि बैदमूथा ने भी अपने दृढ़ भावों को प्रस्तुत करते हुए दीक्षा की भावना व्यक्त की। श्री भभूताराम मेघवाल ने पूज्यवर के स्वागत में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। मुनि मधुरकुमारजी ने अपने पैतृक गांव की ओर से पूज्यवर की अभ्यर्थना की।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में गांववासियों को पूज्य आचार्यवर के इस एकदिवसीय प्रवास से अधिकाधिक लाभ उठाने की प्रेरणा दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'महापुरुषों का सान्निध्य सौभाग्य से मिलता है। भाग्य से मिले ऐसे अवसर का कौन कितना लाभ उठाता है, यह व्यक्ति की जागरूकता पर निर्भर है। रामसीन मूंगड़ा के लोग इस सुअवसर का लाभ उठाएंगे, ऐसी आशा है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संयम एक अर्थवान शब्द है। इसमें अध्यात्म का सार समाहित है। जो संयम की साधना करता है, वह अध्यात्म की आराधना कर लेता है। पंच महाव्रतात्मक मुनि धर्म का स्वीकरण संयम की विशिष्ट साधना है। अनेक भव्य जीवों में साधुत्व की भावना जाग जाती है। जैसे मौत का कोई निश्चित समय नहीं होता, वैसे ही दीक्षा का भी कोई निश्चित समय नहीं होता। सामान्यतया आठ वर्ष की आयु पार होने पर व्यक्ति कभी भी दीक्षित हो सकता है। हर किसी के लिए संभव नहीं कि दीक्षा आ जाए। कई बार बच्चों में संयम की उदग्र भावना हो जाती है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का मार्ग बताया। अणुव्रत की साधना मध्यम मार्ग है। उस पर कुछ आसानी से चला जा सकता है। धर्म का पहला रूप है--उपासना। इसका अपना मूल्य है। लोगों में उपासना धर्म के प्रति रुचि दृष्टिगत होती है। धर्मस्थानों में और धर्मगुरुओं के पास अच्छी भीड़ रहती है। लोग उपासना अपने-अपने ढंग से करते हैं। इसके हेतु भी विविध हो सकते हैं। उपासना नितान्त धार्मिक भावना से की जाती है तो आध्यात्मिक दृष्टि से वह उत्तम है। धर्म का दूसरा रूप आचरणात्मक है। धर्म जीवन में उतरे, यह विशिष्ट बात है।'

विश्व पर्यावरण दिवस के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'कुछ दिन ऐसे निर्धारित है, जिनसे चेतना के जागरण का सुन्दर अवसर उपलब्ध हो जाता है। आज जन-जन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ी है। पर्यावरण विशुद्धि के लिए संयम आवश्यक है। पानी और बिजली का संयम अपेक्षित है। पेड़-पौधों को

काटने से यथासंभव बचना चाहिए। कुछ लोग स्नान करने के लिए नल खोलकर उसके नीचे बैठ जाते हैं, उस समय पानी की मात्रा का उन्हें ध्यान नहीं रहता। जैन सिद्धान्त के अनुसार एक बूंद पानी में असंख्य जीव होते हैं। थोड़े पानी से स्नान और वस्त्र प्रक्षालन किया जा सकता है तो उसका व्यर्थ में अपव्यय क्यों? इसी तरह पंखा, लाइट आदि के संदर्भ में भी संयम रहना चाहिए। पण्डाल में पांच ट्यूबलाइट से काम चल सकता है तो पन्द्रह क्यों? इन छोटी-छोटी बातों में भी सजगता रखी जानी चाहिए। संयम पर्यावरण की समस्या का एक समाधान है, किन्तु संयम मूलतः इन्द्रियों का होना चाहिए।'

रामसीन मूंगड़ा पदार्पण के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'मुनि विमलकुमारजी के सहयोगी मुनि मधुरकुमारजी यहीं के हैं। पहले ये हमारे साथ रहते थे। इनके संसारपक्षीय भतीजे मुनि अक्षयकुमारजी हैं।' आचार्यवर ने इस गांव से संबद्ध मुनि हिमांशुकुमारजी, साध्वी मृदुयशाजी, साध्वी नंदिताश्रीजी, साध्वी तरुणप्रभाजी, समणी संचितप्रज्ञाजी का भी प्रसंगवश उल्लेख किया। दस वर्षीया बालिका प्रसिद्धि बैदमूथा की दीक्षा के लिए की गई प्रार्थना के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'अभी शरीर और ज्ञान की दृष्टि से तुम्हें बड़ी बनना है, फिर देखेंगे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

Lefr&lcy

- हरनावां-किशनगढ़ निवासी श्री पुखराज चोपड़ा का संथारे में तैंयासी वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। मुनि सुरेशकुमारजी के संसारपक्षीय अग्रज, संघ समर्पित सेवाभावी पुखराजजी ने उच्च परिणामों के साथ आचार्यवर की अनुज्ञा से तत्र प्रवासित मुनि पृथ्वीराजजी (श्रीडूंगरगढ़) से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान लिया। आठ दिन बाद मुनिश्री से उन्होंने चौविहार संथारा स्वीकार किया और उसी दिन दोपहर लगभग डेढ़ बजे मुनि पारसकुमारजी से मंगलपाठ सुनते-सुनते अपनी जीवनयात्रा संपन्न कर ली। मुनि मोहनलालजी 'शार्दूल' ने भी उन्हें संथारे के दौरान आध्यात्मिक सहयोग दिया। उनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई।
- सोजतरोड निवासी बेंगलुरु प्रवासी सुश्री कृतिका संचेती (सुपुत्री-श्री सुरेश संचेती) का मात्र बीस वर्ष की अवस्था में एक सड़क दुर्घटना में देहान्त हो गया। कृतिका हंसमुख, मिलनसार व धर्म के संस्कारों से संपन्न कन्या थी। उसके पिता सुरेशजी वहां के अच्छे कार्यकर्ता हैं।
- आशाहोली निवासी श्री राजमल सिंघवी का चौरासी वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। उनके वर्षों से रात्रि चौविहार का नियम था। साधु-साध्वियों की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले सिंघवीजी स्वावलंबी, निर्भीक व धुन के धनी श्रावक थे। उन्होंने अपने जीवन में कई तपस्याएं कीं। एक साथ मासखमण तक की बड़ी तपस्या का वे प्रत्याख्यान कर लेते थे। घोड़ी पर बैठकर आसपास के गांवों में व्यापार व सेवा हेतु जाया करते थे, इसलिए लोग उन्हें 'घोड़ीवाला बासा' कहकर पुकारते थे।
- दिल्ली निवासी श्रीमती पुष्पाबेन पारिख (धर्मपत्नी-श्री जयंतीलाल पारिख) का संथारापूर्वक मुम्बई में स्वर्गवास हो गया। नारीरत्न विभूषित श्रीमती पुष्पाबेन मुम्बई के सुप्रसिद्ध स्व.नेमचन्दभाई वकीलवाला की सुपुत्री थीं। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। साधु-साध्वियों के दर्शन-सेवा बहुत मनोयोग से करती थीं।
- मारवाड़जंक्शन निवासी श्री केवलचन्द मरलेचा (सुपुत्र-स्व.रूपचन्दजी मरलेचा) का अस्सी वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। बिना किसी शारीरिक यंत्रणा के उन्होंने मृत्यु का वरण किया। उनका जीवन सीधा-सादा था। श्री मरलेचा के मन में संघ और संघपति के प्रति गहरी निष्ठा थी।

vu'kkLrk dh lfUufek e fo'ofo|ky; dh f"k"V ifj"kn

जैन विद्या एवं प्राच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन, शोध और प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में प्रयत्नशील

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ का न केवल जैन समाज, अपितु संपूर्ण विश्व को अमूल्य अवदान है। यह विश्वविद्यालय वर्तमान अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के पावन नेतृत्व में अपने लक्ष्य की दिशा में गतिशील है। गत २६ मई को समदड़ी में विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद की एक बैठक पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में समायोजित हुई। नवमनोनीत कुलाधिपति श्री बसंतराज भंडारी की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में निर्धारित विषय पर चिंतन एवं निर्णय हुआ।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- स्व. श्री पारसमलजी गोलेच्छा (बाड़मेर) की ८वीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती देवीबाई, सुपुत्र व पुत्रवधू सोहनराज-कमलादेवी, मदनलाल-पुष्पादेवी, ओमप्रकाश-भवानीदेवी एवं समस्त गोलेच्छा परिवार, बाड़मेर-जोधपुर-अहमदाबाद-सूरत द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्री गणपतलालजी सिंघवी (आशाहोली) को पूज्यप्रवर द्वारा 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने एवं श्री गणपतलाल-शोभादेवी सिंघवी के दाम्पत्य जीवन के ५० वर्ष की संपूर्ति के अवसर पर उनके सुपुत्र व पूत्रवधू राकेशकुमार-रेखा, सुपौत्र यशवंतकुमार व सुपौत्री आशा सिंघवी, मलाड-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सोहनीदेवी कोठारी (धर्मपत्नी-तत्त्वज्ञ श्रावक स्व. जयचन्दलालजी कोठारी, लाडनूं-दिल्ली-गुवाहाटी) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र सुबोधकुमार, विनोदकुमार, सुपौत्र सुधांशु, ऋषभ व प्रपौत्र श्रेयांस कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. प्रेमचन्दजी बरड़िया (जोबनेर-जयपुर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र राजेश, राकेश, पंकज बरड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती गट्टूदेवी सिंघी (धर्मपत्नी-श्री तिलोकचन्दजी सिंघी, श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता-गुवाहाटी-बेंगलुरु) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र नथमल, मालचन्द, चैनरूप सिंघी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्रीमती धापूदेवी चोरड़िया (लाडनूं-सूरत) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू मूलचन्द-प्रेमदेवी, लक्ष्मीपत-संतोषदेवी व सुपौत्र नीरज चोरड़िया द्वारा प्रदत्त।

nh{kk vkn'k

६ जून को पचपदरा में स्वागत समारोह के दौरान परमपूज्य आचार्यप्रवर ने ५ नवम्बर २०१२ को जसोल में समायोज्य दीक्षा समारोह में मुमुक्षु ज्योति (पचपदरा) को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koi lkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk; egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ‹^Š,,‡‡…Šƒ] ‹…‡„†,†^†ƒ
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % ‹&^&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koi lkn pronhA**